समाज–सुधार और जनसेवा में संलग्न

जानकी मैया

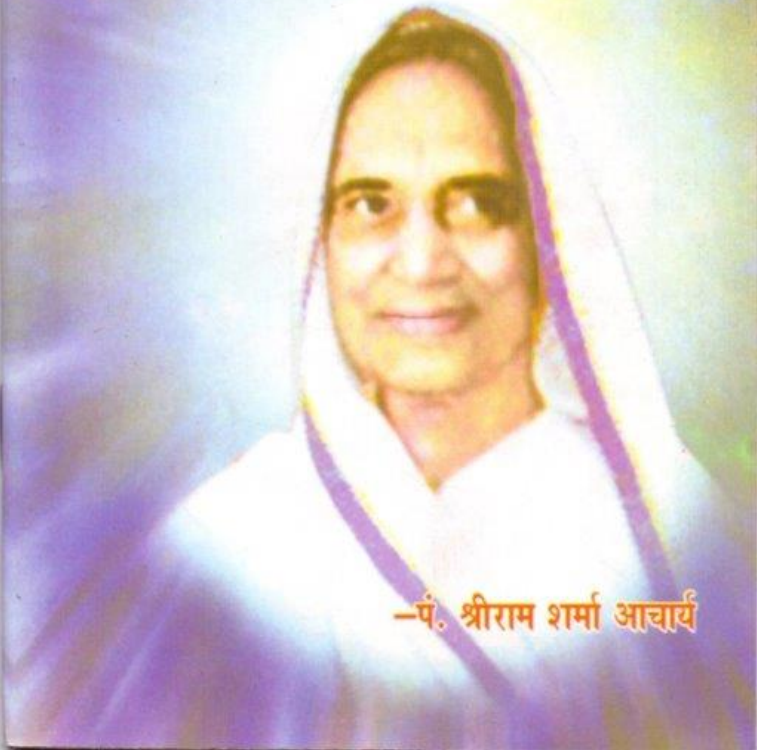

–पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

समाज-सुधार और जन-सेवा में संलग्न—
जानकी मैया

शहरों में रहने वाले और विशेषतया वे व्यक्ति जिनके घरों में नल लगे हैं, इस बात को जल्दी नहीं समझ सकते कि पानी के अभाव से भी करोड़ों लोगों को कितना कष्ट सहन करना पड़ता है। अमेरिका आदि आधुनिक देशों में तो जिन स्थानों में पानी की कमी होती है, सरकार समुद्र के पानी को मीठा बनाकर बाहर से पानी लाकर नागरिकों की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। पर भारत के लाखों गाँवों में जहाँ कुएँ बहुत कम और गहरे हैं, अथवा गर्मी में जिनका पानी सूख जाता है, वहाँ के निवासियों को थोड़े से पानी के लिए भी कितना परिश्रम और प्रयत्न करना पड़ता है, इसको भुक्त-भोगी ही जानते हैं। जहाँ मनुष्यों को भी पीने के लिए जल-कष्ट सहन करना पड़ता है, वहाँ गाय, बैल, घोड़ा आदि पशुओं की क्या दशा होती होगी, इसकी कल्पना से भी मन दुःख से भर जाता है।

ऐसा ही दृश्य जब "जानकी मैया" ने महापुरुष विनोबा के साथ बिहार के गाँवों की पद-यात्रा करते समय देखा, तो उसका हृदय करुणा से ओत-प्रोत हो गया। वह विचार करने लगी कि कैसे खेद की बात है कि ये गरीब लोग पूरा पानी भी नहीं पाते, अथवा दो-दो, चार-चार मील से लाकर अपनी प्यास बुझाते हैं, जबकि नगरों में लाखों व्यक्तियों के यहाँ चाय, शर्बत, कोको-कोला की ही भरमार होती रहती है। उन्होंने यह बात विनोबा जी के सम्मुख प्रकट की। उन्होंने भी इसकी गंभीरता स्वीकार की और वे इस संबंध में किसी उपाय पर विचार करने लगे।

उन्हीं दिनों उन्होंने "कांचन-मुक्ति" का संदेश भी दिया था। इसका आशय यह था कि लोगों में स्वर्ण का जो मोह फैला हुआ है और स्त्रियाँ विशेष रूप से जेवरों के लिए घर के पुरुषों को परेशान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करती रहती है, उस प्रवृत्ति का त्याग करना चाहिए। इसके कारण मनुष्य का आध्यात्मिक और मानसिक पतन होता है, अनेक प्रकार के संकट उत्पन्न होते रहते हैं। यह विचार एक महिला होने के नाते जानकी मैया को विशेष महत्त्वपूर्ण प्रतीत हुआ और वह स्त्रियों में इसका प्रचार करने लगी। जब "चांदिल-सर्वोदय सम्मेलन" के अवसर पर महिला-सम्मेलन हुआ, तो उसने वहाँ उपस्थित सब बहिनों से "कांचन-मुक्ति" की अपील की। उसने कहा कि अब युग बदल गया है और समझदार स्त्रियों को उचित है कि जेवर पहिनने की इस असामयिक प्रथा को छोड़ दें।

जानकी मैया के भाषण से प्रभावित होकर एक बंगाली लड़की ने अपनी अँगुली से अँगूठी उतार कर दे दी। इसके पश्चात् अन्य कितनी ही स्त्रियों ने भी एक-एक करके कितने ही जेवर दिये। अंत में हिसाब लगाकर देखा गया, तो मालूम हुआ कि इस प्रकार २८ तोला सोना प्राप्त हुआ है। जानकी मैया ने वह सब विनोबा जी के सामने लाकर रख दिया और पूछा कि इसका क्या किया जाय ? उन्होंने कुछ सोच कर कहा कि "बहनों के प्रेमपूर्वक दिये हुए इस दान का उपयोग ग्रामीण जनता के लिए जल की व्यवस्था के लिए किया जाना अच्छा है। मनुष्य तो जैसे तैसे पानी प्राप्त कर भी लेते हैं, लेकिन पशु बिना पानी के बहुत कष्ट पाते हैं। उनकी सेवा जगह-जगह कुँओं का निर्माण किये जाने से अधिक होगी और भूमि भी हरी-भरी बनेगी। इसलिए 'कूपदान' का कार्य आरंभ करना उचित है।"

अब जानकी मैया ने प्यासे ग्रामीणों के लिए कूप-निर्माण का व्रत ले लिया और घर-घर में जाकर महिलाओं में इस संबंध में प्रचार करने लगीं। वे जानती थीं कि माताओं में धर्म-भावना विशेष होती है और उन्हें यदि ठीक ढंग से मोड़ा जायेगा, तो वे इस उपयोगी कार्य में भी सहयोग देने लग जायेंगी। इस आंदोलन के आरंभ में उनको क्या अनुभव हुआ, यह उन्हीं के शब्दों में सुनिये—

"उस समय मैं गया में थी, जहाँ मेरी कोई विशेष जान-पहचान नहीं थी। फिर भी बहनों के पास जेठ-बैसाख में भी घूमती। तीन-तीन, चार-चार मंजिल पर चढ़ती और अपनी बात

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समझाती। आजकल माँगने वालों से कोई खुश तो नहीं रहता, पर मुझे तो एक धुन लगी हुई थी। मेरे मन में विचार आया कि १०८ कुएँ हों। सूत की एक 'लड़ी' में तारों की इतनी ही संख्या होती है। पहले महीने में कोई सिलसिला नहीं जमा। निराशा-सी होने लगी। मन डगमगाने लगा कि १०८ की जगह आठ भी हो जायें, तो बड़ी बात है। जब मैं कहती कि गायों के लिए पीने को पानी नहीं मिलता, तब बड़े घरों की स्त्रियाँ कहतीं कि पानी तो बहुत है। मैंने कहा कि आप एक दिन देहात में चलकर देखो। गया के श्री भूपराजा बड़े भावना वाले जमींदार हैं। वह गांधी जी के तथा विनोबा जी के बड़े भक्त हैं, लेकिन उनको या उनके घर वालों को यह कल्पना नहीं थी कि दरअसल कुओं के बिना गाँवों में पशु तथा मनुष्यों को कितना कष्ट है। इसलिए उन लोगों को देहात ले जाकर स्वयं देखने का कार्यक्रम बनाया। जब हम वहाँ पहुँचे, तो जान पड़ा कि गरमी के कारण सब जगह सूखा ही सूखा है, पशुओं की हड्डियाँ दिखाई दे रही थीं और बिना पानी और चारे के वे बेहाल हो रहे थे।"

"गाँव वालों से बातें की तो मालूम हुआ कि पचास घरों के बीच केवल एक कच्चा कुआँ है, वह भी बरसात में भर जाता था। उन्हें हर साल नया खोदना पड़ता था। चूना, ईंट, सीमेंट से पक्का बनाने की शक्ति उनमें नहीं थी। यह हाल देखकर बहनों का हृदय पसीज गया। वे बोली—"सौ तोले की जगह हम दस तोले के ही आभूषण पहिन लेंगी, लेकिन कुआँ बनवायेंगी। गाँव वालों ने कहा, 'हम कुआँ खोद लेंगे, ईंट बना लेंगे। हमें चूना और सीमेंट आदि ही चाहिए। हिसाब लगाने से मालूम हुआ कि यदि गाँव वाले श्रमदान से कुआँ बनालें, तो अन्य सामग्री के लिए पाँच सौ रुपया से काम चल जायेगा। १०८ कुओं के लिए कम से कम पचास हजार रुपया (उस समय की कीमत के अनुसार) चाहिए। गया में लक्ष्मीनारायण जी डालमिया रहते हैं। साधु-संतों के भक्त हैं। उन्होंने दस तोला सोना दिया और सत्य देवजी से भी मैंने दस तोला लिया। धीरे-धीरे वहाँ ३६ कुएँ खुदे और ३० के वचन मिले। जब एक दुकान से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सीमेंट लेने लगे, तो लारी वाले बिना किराये के सीमेंट पहुँचाने लगे, केवल पेट्रोल लेते थे।"

"विनोबा जी एक महीने का भ्रमण करके राँची पहुँचे, तो मैं भी रेल से वहाँ पहुँच गई। राँची में भी घर-घर घूम कर समझाने लगी कि विनोबाजी आवें, तो उनको कुओं की भेंट दी जाय। १३।। तोला सोना मिला और तीस कुओं के लिए पाँच-पाँच सौ रुपये के वचन मिले। वर्षा शुरू हो जाने से कुएँ बनाने का काम तो हो नहीं सकता था, इसलिए सब रकम वहीं पंचों के पास रख कर मैं कलकत्ता चली गई। वहाँ ६१ कुओं के लिए तीस हजार पाँच सौ रुपये और ४।। तोला सोना मिला। यह रकम खादी-भंडार में जमा करा दी गई। कलकत्ते में सभी लोग परिचित थे। मैं इस तरह घर-घर घूमूँ, यह उनको अच्छा नहीं लगा। वे बोले, आपको एक-दो जगह से ही रकम मिल जाय तो काम हो सकता है, फिर इस तरह क्यों घूमती हो ? मैंने उत्तर दिया—"पर मुझे तो स्त्रियों में प्रचार और देश की माँग की जानकारी कराने के लिए भी घूमना है।" इसलिए मैं घर-घर जाती ही रही। जब मैं झील पर, जहाँ सवेरे लोग टहलने आते हैं, कुएँ माँगने पहुँचती तो घनश्यामदास जी बिड़ला हँसकर कहते—"आज मैया जी की झोली में कितने कुएँ पड़े ? मैं कहती—"आज दो पड़े, आज बहुत कम मिला।" मैं उनसे तो क्या माँगती !"

इस तरह "कूप-दान" का आंदोलन जगह-जगह फैला कर जानकी मैया ने धनिक-वर्ग में गरीबों की दशा के प्रति एक प्रकार की सहानुभूति उत्पन्न कर दी। जब वे दिल्ली पहुँची, तो लोगों ने कहा कि यहाँ कुओं का काम नहीं हो सकेगा, यहाँ तो रोज ही चंदे होते रहते हैं। पर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और दो एक स्थानीय कार्यकर्ताओं का सहयोग लेकर घर-घर घूमना आरंभ कर दिया। एक दिन बाबा राघवदास ने कहा—"पं० जवाहर लाल जी से कुआँ कौन लायेगा।" जानकी मैया इसके लिए भी तैयार हो गई और जवाहरलाल जी के पास पहुँची। उन्होंने कहा—"आज विनोबाजी का जन्म दिन है। भीष्म पितामह को अर्जुन ने पृथ्वी में बाण मार कर पानी पिलाया था, वैसे ही आप भी तीर मार कर पाताल फोड़िये,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिससे विनोबा जी को पानी ही पानी मिल जाय।" नेहरू जी खूब हँसे, उन्होंने खुशी से एक कुआँ अपने नाम से दे दिया। जब राजेंद्र बाबू से बात हुई, तो उन्होंने भी दो कुओं का वचन दिया और दूसरे ही दिन एक हजार रुपया भिजवा दिया। राजघाट की प्रार्थना सभा में जानकी मैया ने कहा कि सबेरे तक दिल्ली में ७६ कुएँ हुए थे, एक जवाहरलाल जी का मिलकर ८० हुए। अब आप कृपया विनोबा जी के इस जन्म दिन पर १०८ की संख्या पूरी कर दीजिये। उसी समय एक सज्जन ने दस कुओं के लिए ५ हजार रुपया दे दिया और एक गुजराती भाई ने ८ कुओं का वचन दिया। इस प्रकार ६८ हो गये। पर जानकी मैया अपने उद्योग में लगी रही और रात्रि में तभी सोई, जब १०८ कुओं की संख्या पूरी हो गई।

जन्म और बाल्यावस्था के संस्कार

पीड़ित और अभावग्रस्त जनता के लिए इस प्रकार की हार्दिक सहानुभूति और सेवा भावना रखने वाली 'जानकी मैया' का पूरा नाम जानकी देवी बजाज है। वे भारत के स्वाधीनता संग्राम के एक सुदृढ़ स्तंभ स्वर्गीय जमना लाल बजाज की पत्नी हैं। यद्यपि जन्म से वे एक मारवाड़ी घराने की अपढ़, गहनों से लदी, परदे में रहने वाली, छुआछूत में बहुत अधिक ग्रस्त बालिका थीं। पर दैव ने उनको जमना लाल जी जैसे मनस्वी व्यक्ति की पत्नी बना दिया और महात्मा गांधी तथा विनोबा जैसे युग-पुरुषों के सान्निध्य में वर्षों तक रहने का उनको अवसर प्राप्त हुआ। इससे उनकी कायापलट हो गई और वे एक रूढ़ि तथा परंपराओं से ग्रस्त मारवाड़ी स्त्री के बजाय, नये से नये परिवर्तनों, सुधारों और आंदोलनों की संचालिका बन गईं।

जानकी देवी के पिता जावरा (मध्य भारत) के रहने वाले एक अच्छे व्यवसायी थे। वे पुराने विचारों के और श्रीवैष्णव संप्रदाय के अनुयायी थे। इसलिए आचार-विचार की दृष्टि से बड़े परहेज से रहते थे। उनके घर के चौके में अगर चिड़िया भी घुस जाती, तो चौका फिर से धोया जाता था। मक्खी से बचाव करने के लिए परदे टाँगे जाते थे। बाल बच्चे वाली स्त्रियों का पानी अलग रहता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

था और रसोई उन पृथक् रखे घड़ों से बनाई जाती थी, जिनमें से ब्राह्मण नहाकर और रेशम अथवा सन की गीली धोती पहिन कर पानी निकालता था। इसी पानी से बनी रसोई से ठाकुर जी को भोग लगाया जाता था। घर में नल के पानी का उपयोग नहीं होता था। अगर मंदिर जाते समय ऐसे पानी का एक छींटा भी पड़ जाय तो फिर से स्नान करना पड़ता था।

पर निजी आचरण में ऐसा परहेज रखने पर भी वे हृदय के परम उदार और पर दुःख-कातर व्यक्ति थे। कोई मिलने आता तो उसके सुख-दुःख की बात पहले पूछते। जब मालूम होता कि किसी की लड़की का विवाह है, या घर में विशेष खर्च का कार्य होने वाला है, तो पूछते "खर्च वगैरह की व्यवस्था हो गई है ?" वह कहता "हाँ दादाजी ! सौ एक रुपया की तो तजबीज है, पर वे समझते कि इसे सौ-पचास रुपये की अभी और जरूरत है। बस, उसी समय एकाध बोरा अनाज और कुछ रुपया दिलवा देते। वे रुपये गिन कर नहीं देते थे। मुट्ठी भर के यों ही दे देते थे। ऐसी सहायता पाने वालों में ब्राह्मण, बनिया, किसान, मजदूर, मुसलमान सभी रहते थे।

ऐसे वातावरण में रह कर जानकी देवी भी पूरी "धार्मिक" बन गई थी। उसने अपनी जीवन कहानी में लिखा है कि "मैं बहुत छोटी अवस्था से ही एकादशी का व्रत करने लग गई थी। घर में जो पैसे खर्च के लिए मिलते थे, उनको मंदिर में बैठे ब्राह्मणों को एक-एक दो-दो पैसा करके दे आती थी। एक दिन मैंने हमारे यहाँ शालिग्राम की पूजा करने वाले पुजारी से पूछा कि किस नाम का जप करने से भगवान प्रसन्न होते हैं ? पुजारी ने 'ॐ नमो नारायण' का जप करने को कहा। मैं छत पर जाकर यह किया करती। मैंने सुना था कि माला फेरने या जप की बात दूसरे को मालूम होने से पुण्य घट जाता है, इसलिए मैं यह जप चुपचाप ही करती। कोई अच्छा कार्य चुपचाप करना ही ठीक है, यह संस्कार बचपन से ही मुझमें ऐसा जम गया कि उसके संबंध में दूसरे से कहना या प्रचार करना मुझे अच्छा नहीं लगता।"

इस प्रकार जानकी देवी का पालन-पोषण एक ऐसे रूढ़िवादी, पर सज्जन स्वभाव वाले परिवार में हुआ कि वह पुरातनतावादी बन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गई। मारवाड़ी समाज की स्त्रियाँ प्रायः धार्मिक वृत्ति की होती हैं, पर उनका धर्मभाव अधिकांश में अंध-विश्वास पर आधारित होता है। वही बात जानकी देवी में भी आ गई। जावरा में मुसलमानी राज था, इसलिए शासन के प्रभाव से वहाँ के हिंदुओं में भी पर्दा-प्रथा का पालन कड़ाई के साथ किया जाता था। जानकी देवी के पिता भी पर्दे के विशेष रूप से पक्षपाती थे। जब एकाध बार उनके घर की स्त्रियाँ पैदल ही हनुमान् जी के मंदिर को चली गई, तो पता लगने पर वे बहुत नाराज हुए। जानकी देवी को भी आरंभ से ऐसा ही अभ्यास हो गया था और विवाह के उपरांत वर्धा में भी पर्दे का पालन काफी मात्रा में करती रहीं।

जानकी देवी का रंग साँवला था। चार साल की उम्र में उसको बड़े जोर से चेचक निकली, जिसके कारण वह कई महीने तक कष्ट पाती रही। उसकी जान तो बच गई, पर तमाम बदन पर चेचक के दाग पड़ गये और रंग और भी काला हो गया। एक प्रकार से वह बहुत कुरूप हो गई। वे लिखती हैं कि विवाह हो जाने के बाद वर्धा में भी अपने रूप के कारण मैं किसी से मिलने में भी संकोच करती थी। यहाँ तक कि मुझे दर्पण में अपना मुख देखने में भी संकोच होता था। उधर जमनालाल जी काफी गोरे और सुंदर थे। इसलिए विवाह का निश्चय होते समय इस बात की बराबर चर्चा होती रही कि लड़के-लड़की की जोड़ी तो ठीक नहीं मिलती। पर जमना लाल जी की दादी सद्दीबाई इस बात को कुछ भी महत्त्व नहीं देती थी। जब जमनालाल की माँ ने कहा कि "हमारा लड़का तो गोरा और सुंदर है, उसकी बहू भी सुंदर लानी चाहिए, तो सद्दीबाई ने उत्तर दिया—"बेटी ! हम दोनों सुंदर तो हैं, पर संतान के लिए तो तरसती ही रह गई (जमना लाल जी अन्यत्र से गोद लाये गये थे)। तेरी भाभी को देख कि, है तो काली कुरूप, पर उसने सात रतन (संतानें) दिये हैं। हमको तो ऐसी लड़की चाहिए कि जिससे वंश की वृद्धि हो। रूप में क्या रखा है।"

आजकल की हालत देख कर सद्दीबाई का कथन याद आता है। इस समय रूप और उसके साथ नये से नये फैशन की ही पूछ है। चरित्र और गुणों पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया जाता। लड़के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वयं चाहे काले कुरूप हों, पर पत्नी तो सिनेमा की अभिनेत्रियों के समान सुंदर ही ढूँढ़ते रहते हैं। इस प्रवृत्ति के कारण वर्तमान समय में साँवले रंग की और सुंदरता रहित लड़कियों के अभिभावक उनके विवाह के संबंध में कितने चिंतित रहते हैं, इसे भुक्तभोगी ही जानते हैं। ऐसी लड़कियाँ प्रायः विधुर व्यक्तियों के साथ ही ब्याहनी पड़ती हैं, अथवा उनके साथ बहुत अधिक दहेज का लोभ देकर विवाह ठीक करना पड़ता है।

विवाह और प्रगति के पथ पर

जानकी बाई का विवाह मारवाड़ी समाज की तत्कालीन प्रथाओं के अनुसार नौ वर्ष की आयु में ही हो गया था। उस समय जमना लाल जी तेरह वर्ष के थे। इतनी कम उम्र में विवाह होने के पश्चात् लड़की प्रायः दो-चार वर्ष पिता के घर पर ही रहा करती है, जिससे दांपत्य-जीवन तेरह-चौदह वर्ष की आयु तक आरंभ हो पाता है। पर जमनालाल जी के बाबा बच्छराज जी को घर के सूना होने के कारण बहू को बुलाने की जल्दी पड़ी रहती थी। इसलिए विवाह के पश्चात् उसका पीहर में रहना कम ही हो सका। घर की बड़ी-बूढ़ी स्त्रियाँ चाहती हैं कि इस तरह पास रहने से बाल पति-पत्नी में प्रेम उत्पन्न हो जाय, जो आगे चलकर और भी सुदृढ़ हो सकेगा। पर जमनालाल जी और जानकी बाई भी बाल्यावस्था में बड़े संकोची और शर्मीले स्वभाव के थे, इसलिए सब तरह से कोशिश करने पर भी वे एक दूसरे से बोलने का साहस नहीं करते थे। धीरे-धीरे कई वर्ष बाद जब घर के सब वृद्ध-जन एक-एक करके मरते गये तब इनकी झिझक टूटी और गृहस्थी का सारा बोझ अपने ऊपर आ पड़ने से स्वयमेव ही मिल-जुल कर सब व्यवस्था करने लगे। पर अब भी जानकी देवी का रूढ़िवादी स्वभाव कायम था। वह पतिव्रत धर्म का पूर्ण रूप से पालन करना चाहती थी, इसके लिए उसका तरीका वही पुराना रहा। पति की पूजा करना, उसका पादोदक लेना, उसकी जूठी थाली में भोजन करना आदि। वह प्रायः "स्त्री धर्म" का वर्णन करने वाली पुराने ढंग की पुस्तकों को पढ़ा करती थी और समझती थी कि उनमें जो कुछ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिखा होता है, वह सब भगवान् का ही लिखा हुआ है। इसलिए वह उन बातों का अक्षरशः पालन करने की चेष्टा करती थी। इस संबंध में उसमें जो कुछ है, उससे भारतीय नारी की स्वेच्छापूर्वक बंधनग्रस्त स्थिति पर बहुत अच्छा प्रकाश पड़ता है।

"पहली बात जिसका मुझ पर असर हुआ वह यह कि पति या बड़ों के बाद ही भोजन करना चाहिये। मैं ऐसा ही करने लगी। बच्छराज जी और जमना लाल जी प्रातःकाल बादाम का हलुआ और कुछ नमकीन खाकर काम में लग जाते थे, और मेरे लिए भी ये चीजें ऊपर भेज देते थे। बच्छराज जी नौकरानी से पूछते भी रहते थे कि "बीनणी (बहू) ने कलेवा कर लिया क्या ?" मैं बिना कलेवा किये ही 'हाँ' कहला देती और अपने पूजा-पाठ तथा सीने-पिरोने में लगी रहती। जब बच्छराज जी तथा जमना लाल जी दोपहर को भोजन कर चुकते, तभी मैं भोजन करती। इसमें दो बज जाया करते थे। नियम पालन का इतना ख्याल रखती कि कभी कोई चीज खाने की इच्छा भी हो जाती, तो भी उसे मुँह में डालने से बचती। पीहर में तो मैं दिन भर में कई बार खा-पी लेती थी। पर अब तो मेरा खाना-पीना पति-भक्ति की भावना के अनुसार होने लगा। दूसरे मैं पति की जूठी थाली में भोजन करने को पति-भक्ति समझती थी। इसलिए जमना लाल जी की थाली रखवा लेती और उसी में भोजन करती।"

"इस प्रकार अनियमित भोजन का मेरे शरीर पर खराब असर होने लगा। मेरे पेट में गाँठे बनने लगीं, जिससे टट्टी जाने में कष्ट होता था। शरम के कारण यह बात किसी से कहने में संकोच करती थी और यह सोच कर रह जाती थी कि इसमें दूसरा कोई क्या करेगा ? परिणाम यह हुआ कि मुझे मस्से की बीमारी (बवासीर) हो गई, जो बाद में बढ़ती ही गई।"

"जमना लाल जी अपने बगीचे में शिवजी की पूजा करते थे और रुद्राक्ष की माला गौमुखी में डाल कर जप करते थे। उनके कमरे में योगियों के चित्र भी टँगे रहते थे। जब जमना लाल जी से मेरा परिचय बढ़ गया, तब मैंने कहा कि पूजा घर पर ही किया करें। उन्होंने यह मान लिया और पूजा का सामान बगीचे से घर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मँगवा लिया। वे स्नान करके पूजा पर बैठते और मैं उनकी धोती धोकर फिर उनकी पूजा भी करती। मैंने पढ़ा था कि पति का पादोदक, जैसे वैष्णवों में गुरु का लेते हैं, लेना चाहिए और सफेद फूल से पूजा करनी चाहिये। इसलिए मैंने एक गमला ऊपर रख लिया था। उसमें से नित्य एक फूल लेकर पति पर चढ़ाती और श्लोक का पाठ करते हुए चाँदी की कटोरी में उनके दाहिने पैर के अँगूठे को धोकर उस जल को पी जाती थी।

"जमना लाल जी को ये दोनों क्रियायें—जूठी थाली में भोजन करना और अँगूठे को धोकर पीना, अच्छी नहीं लगती थी। जूठी थाली में भोजन करना तो कुछ समय बाद बंद ही कर देना पड़ा। एक तो उनको यह नापसंद था और दूसरे जूठे थाल पर मक्खी आदि बैठती थी, सो मुझे भी ठीक नहीं लगता था। पर पादोदक का लेना मेरे आग्रह के कारण चलता रहा। जब वे जेल चले जाते तब भी मैं उनका पादोदक शीशी में भरकर रख लेती और जब कभी उनसे मिलने जाती, चुपचाप पैर धोकर ले आती।"

"एक बार हम लोग चित्रकूट गये थे। वहाँ की मिट्टी का कण-कण पवित्र माना जाता है। वहाँ की मिट्टी मैं लाना चाहती थी। पर मिट्टी लाने में मेरा दूसरा उद्देश्य यह था कि जमना लाल जी के पैरों की रज और भी पवित्र रहेगी। इसलिए जब तक हम वहाँ रहे, मैंने एक काम यह किया कि जब भी वह बाहर से आते, उनका दाहिना अँगूठा धोकर उसे वहाँ की मिट्टी में मिलाकर पेड़े-से बना लिया करती। आज भी ये पेड़े मेरे पास रखे हैं। प्रति दिन स्नान के बाद अब भी उसका एक कण मुँह में रख लेती हूँ।"

पाठकगण ! विचार करें कि इन तथाकथित "धर्म" की पुस्तकों ने हमारी स्त्रियों को किस प्रकार अंध विश्वासी बना दिया है, जिसके कारण वे अपनी प्रत्यक्ष हानि का भी विचार नहीं करती। पतिभक्ति कोई बुरी चीज नहीं है, पर क्या उसका पालन ऐसी अविवेक पूर्ण बाह्य क्रियाओं से ही हो सकता है ? क्या करोड़ों हिंदू और अन्य जातियों की स्त्रियाँ जो ऐसा नहीं करती, पतिव्रता नहीं हैं? हमने सैकड़ों योरोपियन स्त्रियों का हाल पढ़ा है, जिन्होंने जीवन भर पति का हर तरह की कठिनाइयों में साथ दिया है और उसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साथ ही प्राण भी त्याग दिये हैं। हमको उस अँगरेज महिला का किस्सा याद आता है, जिसे "टिटैनिक" जहाज के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने पर पति ने जबर्दस्ती "प्राण रक्षक नौका" में बैठा दिया था, पर स्थान की कमी से वह स्वयं डूबते हुए जहाज पर ही ठहरा रहा। यह देख कर स्त्री से न रहा गया, जैसे ही नाव चलने लगी कि वह कूद कर पुनः जहाज पर आ गई और पति से कहने लगी कि जब हम आजीवन एक साथ मिले हुए रहे हैं, तो अब मृत्युकाल में पृथक् क्यों हों। बस, वे दोनों ही अपने कमरे में चले गये और शांतिपूर्वक जलराशि के भीतर समा गये।

क्या इस तरह जीवन के अंतिम क्षण तक पति के प्रणय-सूत्र में बँधी रहने वाली अँगरेज महिला इस कारण पतिव्रता नहीं कही जायेगी कि वह पति का अँगूठा धोकर पादोदक नहीं लेती ? इस प्रकार की बातों को सिवाय अंधविश्वास के और कुछ नहीं कहा जा सकता। जानकी देवी ही जब गांधी जी के साबरमती आश्रम में रहने लगी और उनके उपदेश से उसने सभी गहनों का त्याग कर दिया, तो वह इस संबंध में ऐसी लापरवाह हो गई कि अनेक बार चूड़ियों के टूट जाने पर एक-दो दिन बिना चूड़ियों के ही बिल्कुल खाली हाथ रह जाती थी। इससे एकाध बार अन्य स्त्रियों को उसके पति का 'अमंगल' होने का संदेह भी हो गया। गांधीजी की पत्नी कस्तूरबा भी चूड़ियों से कभी खाली हाथ नहीं रखती थीं। वह कहा करती थीं कि जानकी देवी तो गांधीजी को और भी बढ़ावा देती है। शायद किसी दिन वे कहने लग जाये कि "देखो, जानकी बहन तो चूड़ी नहीं पहनती, तुम इसके लिए क्यों इतना आग्रह करती हो ?"

सच्ची पतिव्रता वही है, जो पति के अनुकूल चलें और उसके कार्यों तथा विचारों को पूरा करने में सहयोग दे। जमनालाल जी की मृत्यु के बाद जब जानकी देवी ने सती होने की इच्छा प्रकट की तो गांधीजी ने उनसे यही कहा कि पति के साथ जल मरना कोई बहुत बड़ी प्रशंसा की बात नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि तुम्हारे पति ने जिन कार्यों को पवित्र मान कर उनके लिए अपना जीवन अर्पण किया था, तुम उन अधूरे कामों को पूरा करने में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपना तन, मन, धन सब कुछ समर्पण कर दो, और उसकी पूर्ति में तिल-तिल करके अपने जीवन की आहुति दो। यही सच्चा पतिव्रत और सतीत्व है।

सोना चाहे भगवान् हो या शैतान् पर त्यागने योग्य है ?

एक बार जानकी देवी ने अपने घर पर आये एक मेहमान की कमर में सोने की तागड़ी (करधन) देखी। मारवाड़ियों में यह भी धनवानों में प्रचलित है। जानकी देवी ने जमना लाल जी से कहा—"वे भी सोने की तगड़ी पहना करें। उन्होंने उत्तर दिया—"सोना तो भगवान् का रूप है, उसे कमर के नीचे नहीं पहिनना चाहिए।" इस पर वह चुप हो गई और उसके सामने यह प्रश्न खड़ा हो गया कि वह स्वयं क्या करे ? मारवाड़ी महिलाओं का गहनों का प्रेम प्रसिद्ध ही है। वे सर से पैर तक जेवरों से लदी रहती हैं, जिनकी ताब प्रायः तो पहुँच ही जाती होगी। पर और सब गहनों की अपेक्षा भी तागड़ी का स्थान कुछ ऊँचा माना जाता है। जानकी देवी भी ब्याह के बाद से ही तागड़ी पहनती आई थीं। पर अब पति के मुख से यह सुन कर कि सोना तो भगवान् का रूप है, क्योंकि भगवान् का एक नाम 'हिरण्य गर्भ' भी है और 'हिरण्य' का अर्थ सोना ही है, उसकी "धर्मश्रद्धा" जाग्रत् हो उठी। वह कहने लगी कि जब सोना भगवान् का स्वरूप है, तो मैं भी इसे कमर के नीचे कैसे पहन सकती हूँ ? उधर तागड़ी का मोह भी जोर मारता था कि अपने समाज में सभी इसे पहनते हैं, मैं इसके बिना न जाने कैसी लगूँगी। पर अंत में "धर्म-भावना" की ही जीत हुई और उसने तागड़ी को सदा के लिए त्याग दिया।

इसके कुछ समय बाद ऐसा समय आया जब गांधी जी के कार्यक्रम ने जोर पकड़ा और उन्होंने उस सिलसिले में कहा—"सोना कलि रूप है। दूसरों में ईर्ष्या पैदा करता है, खो जाने का और चोरी का डर रहता है, शरीर पर मैल जम जाता है, नाक, कान से दुर्गंध आती है। इससे देश के मूलधन में भी कमी पड़ती है।" जमनालाल जी गांधीजी के आनंद अनुयायी ही क्या, उनके पाँचवे पुत्र बन चुके थे। इस निर्णय को सुन कर उन्होंने जानकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देवी को पत्र में लिखा—"बापू का आदेश है कि गहने त्याग दो।" इस पत्र को पढ़कर उसकी क्या मनःस्थिति हुई, इसका वर्णन करते हुए जानकी देवी ने स्वयं लिखा है—

"जमनालाल जी की चिट्ठी तो मेरे लिए वेद-वाक्य की तरह थी। अगर वह यह बात मेरे सामने कहते तो मैं शायद बहस भी करने लगती, पर उन्होंने बापूजी का आदेश लिख कर भेज दिया, तो मैं क्या करती ? चिट्ठी मेरे सामने रखी थी और मैं एक-एक गहना उतारती जाती थी। मारवाड़ी स्त्रियों में पैर के कड़े कभी नहीं खोले जाते। गरीब से गरीब भी पैर में हल्का-भारी कड़ा पहिनते हैं। पर मुझे जब कोई गहना पहिनना ही नहीं, तो इस झूठे मोह को भी त्याग दिया। कड़ा निकाल देने पर सबको आश्चर्य हुआ और कई स्त्रियाँ मुझे बिना कड़ों के देखने भी आई।

घूँघट कैसे हटा ?

वर्धा में अग्रवाल महा सभा का अधिवेशन होने वाला था। उसके लिए जमनालाल जी ने जो भाषण तैयार किया, उसमें पर्दा-प्रथा के विरोध में भी कुछ कहा गया था। वे जानते थे कि मैं, मेरी देवरानी तथा घर की अन्य स्त्रियाँ घूँघट निकालती हैं। जमनालाल जी जो कुछ कहते थे, उसकी शुरुआत अपने घर से करते थे। इसलिए उनकी नजर हम पर जाना स्वाभाविक था। हमारी स्थिति बड़ी विचित्र थी। घूँघट संस्कार एक-दो दिन या एक-दो पीढ़ियों का थोड़े ही था ? वह एकाएक कैसे छूटे ? घूँघट की प्रथा तो अभी तक बहुत जगह कायम है। राजस्थानी समाज में घूँघट प्रतिष्ठा, सभ्यता और कुलीनता का चिह्न माना जाता था।

जमनालाल जी श्रीकृष्णदास जाजू को अपने बड़े भाई की तरह मानते थे। उन्होंने जाजूजी से कहा—"आपको घर की स्त्रियों से बात करनी चाहिये और उनमें संस्कार डालने चाहिये। वे निचली श्रेणी यानी नौकरों-चाकरों से ही बात-चीत करती हैं। इससे उनमें ऊँचे विचार कैसे आयेंगे ? आप जैसे लोगों को संकोच छोड़ कर उनके संकोच को भी दूर करना चाहिये," पर जाजूजी इस तरह कहने से कब बोलने वाले थे। उनसे कोई स्वयं बोल सकते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"अंत में जमनालाल जी ने अपने जन्म-पिता कनी रामजी को तैयार किया और ऊपर आकर हम से बोले—"अपने घर में घूँघट छोड़ते हैं। सो पहले काकाजी से ही शुरुआत करनी है। नीचे चलो, काकाजी को मैं तैयार करके आता हूँ।" मैंने अपनी देवरानी से कहा "बीनणी, सुसराजी के पास चलणों है" उसने उत्तर दिया—"जिठाणी जी, आगे तो आपणों ही चालणों पड़सी।" बड़ा संकट था। हम कैसे उनके सामने जातीं। हम तो यह सुनकर ही पसीना-पसीना हो गई। खैर, किसी तरह हम दोनों उनके पास गई, कुछ नहीं किया कि भाग आई। उन्होंने हमको आशीर्वाद दिया "सुखी रहो बेटा।" वह भी पसीने से तर हो गये थे। हमारे घर में यह प्राचीनता के अंत और नवीनता के उदय का संधिकाल था। एक बार पहाड़ की चोटी पर चढ़ जाना भी सहज होता, समुद्र पार जाना भी संभव हो जाता, पर उस समय हमारे घर में ससुर के सामने बिना घूँघट किये बोलने को पहुँच जाना, बहुत बड़ी बात थी।

"इसके बाद माथे पर सोने का 'बोर' लगाना छूटा और तब घाघरे भी लँहगों में बदलने लगे। वे घाघरे चालीस से लेकर पचास गज तक के होते थे और उनमें तीन सौ से लगाकर चार सौ तक कलियाँ होती थीं। चार सौ कलियों का घाघरा तो मैं भी पहन चुकी हूँ। ऐसे बड़े घाघरे बहुत दिनों तक धुलते भी न थे।

"मेरा घूँघट छूट गया, तो मुझे दूसरी बहनों का घूँघट खुलवाने की धुन लग गई। कई बहनों को तो मैं घूँघट खुलवाकर सभाओं के मंच पर खींच लाई। जहाँ-जहाँ मैं गई वहाँ मेरा यही काम हो गया। इसके कुछ ही दिन बाद कलकत्ते में 'मारवाड़ी महिला सम्मेलन, हुआ। वहाँ वालों ने मुझे अध्यक्ष बनाया। उस अवसर पर बापूजी ने एक बड़ा सुंदर संदेश पर्दा-प्रथा तोड़ने के लिए मेरे द्वारा भेजा।

प्रिय भगिनि,

आप बहनों से पर्दा तुड़वाने कलकत्ता जा रही हैं, इस लिए धन्यवाद। पर्दा बहम ही नहीं है, मुझे उसमें पाप की गंध आती है। पर्दा किससे रखें ? क्या पुरुष-मात्र विषयासक्त रहते हैं ? क्या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्त्रियाँ अपनी पवित्रता बिना पर्दा के नहीं रख सकती ? पवित्रता मानसिक बात है, सभी स्त्री-पुरुषों में सहज होनी चाहिये। भाई इस बुद्धि-प्रधान युग में स्त्री धर्म की रक्षा करना चाहतीं हैं, तो उसे दरिद्रनारायण की सेवा करनी होगी, शिक्षण लेना होगा। दरिद्रनारायण की सेवा का अर्थ है खादी का प्रचार, कातना आदि। हरिजन-सेवा का अर्थ है, अस्पृश्यता रूपी कलंक को धोना, ये दो बड़े कार्य भगवान् के हैं, और विद्या पाने का कार्य भी पर्दा रखने से कभी नहीं चल सकता।

क्या पर्दा रखकर सीता रामजी के साथ जंगलों में भटकी होंगी। सीता से बड़ी पवित्र स्त्री जगत् में कभी हुई है ? बहनों में कहो, पर्दा तोड़ों और धर्म को रखो।

आपका

मोहनदास गांधी

इसके बाद भी जानकी देवी ने समय-समय पर अनेक बहनों के घूँघट खुलवाये। फिर जब एक बार लहर चल पड़ी, तो एक से दूसरे में, दूसरे से तीसरे में यह विचार फैलता चला गया। आज मारवाड़ी समाज में पर्दा का प्रचार जो बहुत घट गया है, उसका श्रेय जानकी देवी जैसी प्रचारिकाओं को ही है जिन्होंने आज से चालीस वर्ष पहले समाज और परिवार वालों के विरोध तथा लोगों की बुरी लगने वाली टीका-टिप्पणी को सहन करके इस कार्य को आरंभ किया था। बाहर वाले तो क्या, स्वयं जमनालाल जी की माता कहती थी कि "जब पर्दा करती थी तो ऐसा कि कोई एक नाखून भी न देख सके। और अब छोड़ा तो ऐसा छोड़ा कि पुरुषों की सभा में मंच पर खड़े होकर व्याख्यान देने लगी।" इसके उत्तर में जानकी देवी हँस कर कहती—"मैं क्या करूँ ? जिसको आपने जन्म दिया है उसी अपने बेटे से कहो। जो वह कहें, मुझे तो वही करना पड़ेगा।" जानकी देवी का गहना उतार देना भी उनको अच्छा नहीं लगा। वह कहती—"इस लड़की ने तो सब गहना उतार कर रख दिया और मैं बूढ़ी पहनती रहती हूँ, यह क्या अच्छा दिखाई पड़ता है ?"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तो भी इनके त्याग का प्रभाव तो सब पर पड़ता ही था। इनके ससुर (जमनालाल जी के पिता) देवली में काम करते थे। एक बार जानकी देवी वहाँ की कांग्रेस द्वारा आयोजित सभा में व्याख्यान देते हुए कहा कि तमाखू-बीड़ी पीना अच्छा नहीं है। जब इनके ससुर ने यह बात सुनी तो कहने लगे—"बहू तो लोगों को तमाखू पीने से रोकती हैं, तब मैं उसे कैसे पीऊँ ?" बस उसी दिन से उन्होंने हुक्का आदि का त्याग कर दिया।

पर रूढ़िवादी लोगों में से अनेक अपनी धुन के पक्के होते हैं। जमनालालजी के पुरोहित और मंदिर के पुजारी "जोशी जी" ने जब यह सुना कि सेठानी जी (जानकी देवी) ने पर्दा छोड़ दिया है और कांग्रेस के प्रचार कार्य में चारों तरफ घूम कर व्याख्यान देने लगी हैं, तो उनको बड़ा बुरा लगा। उन्होंने प्रतिज्ञा करलो कि "सेठानी जी न तो मेरे सामने आवें, न मुझसे बातें करें, नहीं तो मैं कुएँ में गिरकर जान दे दूँगा या वर्धा छोड़कर चला जाऊँगा !" जब वे जानकी देवी को इधर-उधर देखते, तो कहीं अन्यत्र जाकर छिप जाते। वे परंपरावादी थे और घूँघट में प्रतिष्ठा समझते थे। जानकी ने स्वयं भी उनके सामने जाना छोड़ दिया था, क्योंकि वे ऐसे "कट्टर" लोगों के कारण अपना समय या काम खराब करना नहीं चाहती थीं।

जब गांधीजी के आदेश से जमनालाल जी अपने मंदिर का दरवाजा अछूतों के लिए खोल दिया, तो जोशीजी ने मंदिर में जाना ही छोड़ दिया। पच्चीस वर्ष तक उन्होंने मंदिर के भीतर कदम नहीं रखा। वे इसके लिए गांधीजी की भरपेट बुराई करते रहते थे। अंत में जमनालाल जी की ग्यारहवीं श्राद्ध तिथि के अवसर पर वे मंदिर में आये। वे कहते थे कि "मुझे सेठजी की प्रेरणा ही मंदिर में ले आई।" कुछ भी हो, जानकी देवी उनके जीवन-निर्वाह की व्यवस्था निरंतर करती रही।

महात्मा गांधी देश की नब्ज को सबसे अधिक पहिचानते थे और उन्होंने चुन-चुन कर ऐसे कार्यक्रम चालू किये थे, जिनसे देश का सार्वजनिक विकास हो। वे जानते थे कि केवल राजनीतिक आंदोलन से स्वराज्य नहीं मिलेगा और यदि वह किसी प्रकार मिल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाय, तो उससे लाभ नहीं उठाया जा सकता। जब तक यहाँ के स्त्री पुरुषों में अनेक प्रकार के दोष बने रहेंगे, जब तक हानिकारक रूढ़ियों से उनका पिंड नहीं छूटेगा, तब तक वे प्रगति के पथ पर कदापि अग्रसर नहीं हो सकते। इसलिए उन्होंने महिलाओं की जाग्रति, अछूतोद्धार, सादा रहन-सहन, धार्मिक उदारता, श्रमजीवियों से सद्व्यवहार आदि अनेक लोक हितकारी प्रवृतियों को जन्म दिया था और उनके माध्यम से भारतीय जनता को सशक्त तथा कर्तव्य परायण बनाने का प्रयत्न किया था।

इन सब कार्यक्रमों में "महिला-जागरण" का आंदोलन किसी दृष्टि से कम महत्त्वपूर्ण नहीं था। स्त्रियों के पिछड़े और संकीर्ण विचारों के होने के कारण हमारे अनेक आंदोलन अकाल में ही समाप्त हो जाते थे। स्त्रियाँ स्वयं तो ऐसा कोई सार्वजनिक हित का कार्य करती ही नहीं थीं, साथ ही घर के पुरुषों को भी ऐसे कार्यों में सम्मिलित होने से बराबर रोकती रहती थीं। वे सार्वजनिक कार्यों को व्यर्थ के काम समझती थीं और यह विचार करती थीं कि भाई पुरुष ऐसे कामों में पड़ गये तो धन और समय की 'बरबादी' होगी। वे तो यही चाहती थीं कि पुरुष अपनी सारी शक्ति घर के कार्यों, स्त्री-बच्चों को आराम पहुँचाने में ही खर्च करता रहे। देश और समाज के सभी कार्य उनकी दृष्टि में व्यर्थ ही थे।

इसलिए असहयोग आंदोलन के आरंभ में ही महात्माजी ने "नारी-जागरण" का शंखनाद किया। उन्होंने कहा कि यदि देश की आधी जन-संख्या इस प्रकार स्वाधीनता संग्राम से सर्वथा पृथक् और उदासीन बनी रहेगी, तो भारतवर्ष कभी सच्चे अर्थों में स्वाधीन न बन सकेगा। मातृभूमि के उद्धार का कार्य केवल पुरुषों का ही नहीं है, वरन् उसकी पत्नियों को भी अपना कर्तव्य पालन करना चाहिये। जब तक स्त्री अपने पतियों, भाइयों और पुत्रों के साथ बराबर कदम बढ़ाते हुये प्रगति पथ पर अग्रसर न होंगी, तब तक हमारी कोई योजना पूरी तरह सफल नहीं हो सकेगी। नारी तो शक्ति का स्वरूप है, जब तक वह पुरुष का साथ नहीं देगी, उसे प्रोत्साहित न करेगी, विजयी होकर लौटने पर उसका प्रेमपूर्वक स्वागत नहीं करेगी, तब तक पुरुष पूरे अंतःकरण से स्वाधीनता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समर में भाग न ले सकेंगे। अतएव नारी-जागरण बहुत ही आवश्यक कार्यक्रम है।

इस कार्य में जानकी देवी उनकी बहुत बड़ी सहायिका सिद्ध हुई। वह समाज में एक उच्च स्तर के घर की महिला थी, वह स्वयं प्राचीन परंपरा की दृढ़ अनुयायी थीं और फिर गांधी जी के उपदेशों से स्वाधीनता-संग्राम की कार्यकर्त्री बनी थी, इसलिए "महिला-मंडल" पर उसका खूब प्रभाव पड़ता था। उसने वैसे तो सार्वजनिक रूप से जो कार्य किये, वे सभी के लिए हितकारी थे, पर अपने जातीय संबंधों के कारण मारवाड़ी स्त्रियों में उसका खूब प्रभाव पड़ता था। उसने इसका उपयोग मारवाड़ी बहनों को जगाने में किया और यह बड़ा कल्याणकारी सिद्ध हुआ। इससे दूसरा लाभ यह भी था कि जेवर छुड़ाने के साथ ही, वह उन स्त्रियों से कांग्रेस के लिए चंदा वसूल करने में भी अद्वितीय सिद्ध हुई। इस प्रकार वे एक साथ दो उद्देश्य सिद्ध करती थीं। गहने की हानिकारक प्रथा का उन्मूलन और उसमें से बचने वाले पैसे में से कुछ का उपयोग देश और समाज सेवा के कार्यों के लिए करना। अपनी इस शक्ति का उपयोग करके ही उन्होंने "कूप-दान" के आंदोलन को सफल बनाया था।

साबरमती आश्रम में

पर यह शक्ति भी जानकी देवी को अनायास प्राप्त नहीं हो गई। इसके लिए उसे साबरमती आश्रम में रह कर काफी 'तपस्या' करनी पड़ी थी। उसने न तो पीहर में हाथ से कोई काम किया था और न वर्धा आकर उसे कोई काम करना पड़ा। सब काम नौकर ही करते थे। इसलिए जब जमनालाल जी ने बच्चों और स्त्री के सुधार और शिक्षण की दृष्टि से साबरमती में रहने का निश्चय किया, तो उन्होंने गांधीजी से यह भी कह दिया कि आश्रम के नियमों के अनुसार जानकी देवी का निभाव कठिन होगा। इस बात को समझ कर गांधीजी ने जमनालाल जी को आश्रम की हद के बाहर एक मकान में रहने को दिया, जिससे जानकी देवी आश्रम के समस्त नियमों का एकदम पालन करने से बची रहें, पर निकट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संपर्क में रहने से धीरे-धीरे वहाँ के नियमों का पालन करना सीख जाय। तो भी जानकी देवी को अपनी अनुभवहीनता के कारण कितनी परेशानी उठानी पड़ी, इसका वर्णन करते हुए उसने लिखा है—'हमने सुन रखा था कि आश्रम में किसी प्राणी को साँप-बिच्छू तक को नहीं मारा जाता है। वहाँ कुत्ते भी बहुत थे। हर क्षण उनके कारण परेशानी रहती। मेरी हालत तो और भी खराब थी। वर्धा में हम ऊपर बँगले में रहते थे, नीचे चौका में पहरा रहता था। दरवाजे आदि बंद रखने की भी हमारी आदत न थी। आरंभ में हम कोठार से सामान लाते, पर कुत्ते आते और सामान ले जाते। इस तरह वे हिल-मिल गये। एक दिन एकादशी का व्रत था, शहर आश्रम से चार मील दूर था। नौकर फल वगैरह लेने शहर गया। मैंने और मेरी ननद गुलाबबाई ने सोचा कि कुँए से पानी ले आवें, नहीं तो अँधेरा हो जायेगा। आश्रम की दौड़-धूप के कारण भूख भी जोरों से लगती थी। बरामदे में सब तैयारी करके रखी कि रामकृष्ण (छोटे पुत्र) पाबंदी में चप्पल डाल दी। अब प्रश्न उठा कि अँधेरे में पानी लेने कौन जाय ? हम विचार कर ही रहे थे कि कुत्ता आकर दूध को 'लप-लप' पीने लगा। अब यह चिंता हुई कि दुबारा दूध कहाँ मिलेगा, इतने में दूसरा कुत्ता आकर अंजीर के माल उठाकर ले भागा और तीसरा पपीता उठा ले गया। इस प्रकार फलाहार की व्यवस्था गड़बड़ हो गई और उधर संध्या की प्रार्थना का समय हो चुका।"

"रसोई घर बंद करके रखने की हमारी आदत नहीं थी। मक्खन निकाल कर तवेली में रखकर कोठार में दूसरा सामान लेने जाती कि कुत्ते आकर मक्खन ले जाते। एक दिन आश्रम की बेला बहिन खाना-पीना करके हमारे यहाँ आई। आते ही उसने कहा कि "अभी तक तुम लोगों का भोजन भी नहीं हुआ। चलो मैं रोटी बना देती हूँ। मैं बेसन पीस कर लाई, तब कढ़ी बनी। बेला बहन रोटी बनाकर जाने लगी कि इतने में एक कुत्ता लपक कर जितनी उसके मुँह में आई, रोटी लेकर भाग गया। हम सब पहले दिन के भूखे थे, बची हुई उतनी रोटियाँ खाकर ही भूख बुझाई। बेला बहन ने ये सब बातें किशोरलाल भाई से कहीं। उन्होंने अपने धर्मगुरु

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

केदारनाथ जी से कहा कि "जमनालाल स्वयं तो रसोइया और नौकर लेकर इधर-उधर चले गये हैं, और स्त्री-बच्चों को यों ही छोड़ गये हैं।" मैं समझती थी कि जमनालाल जी जानबूझ कर ऐसा करते थे। वे प्रायः कहा करते थे कि स्त्रियों को अपने घर की रसोई बनानी आनी चाहिये। मुझे रसोई बनानी आ जाय इसी दृष्टि से वे रसोइया को अपने साथ ले जाते थे।"

"केदारनाथ जी ने आकर देखा कि दो कुत्ते एक कमरे में बैठे हैं और बाकी सब बरामदे में हाजिर हैं। उन्होंने छोटे-छोटे पत्थरों का ढेर इकट्ठा किया। और कुत्तों पर फेंकना शुरु किया। वे पत्थर इस तरह फेंकते थे कि कुत्तों को चोट तो नहीं आती, पर वे डर जाते थे, कुत्ते सचमुच इतना डर गये कि वे फिर वहाँ आना ही भूल गये। इससे हमने भी यह सबक सीख लिया। बाहर से कठोरता और भीतर से नम्रता का यह गुण हमने प्रत्यक्ष देख लिया।"

जानकी देवी के अनुभव से मालूम पड़ता है कि जिन बड़े लोगों को बहुत सुखी और शान से जीवन बिताने वाला समझा जाता है, उनकी दशा बड़ी असहाय और दयनीय होती है। कोई खास परिस्थिति आ जाने पर अथवा आवश्यकता पड़ जाने पर उनकी कैसी दुर्दशा होती है, यह उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है। इसी प्रकार जब वह बच्चों को साथ लेकर नदी में कपड़े धोने जाती, तो बड़ी लड़की कपड़ा गिराती जाती। कपड़े अधूरे ही धोये जाते, तब तक आश्रम की कोई घंटी बज जाती और भागना पड़ता। कभी किसी गाय आदि से सामना पड़ जाता, तो भागना पड़ता या दूसरे से सहायता माँगनी पड़ती। सारांश यह कि जो लोग अपने हाथ से काम करना नहीं सीखते, केवल नौकरों के भरोसे जीवन व्यतीत करते हैं, उनको तनिक सा परिवर्तन होने पर ही बड़ी परेशानी उठानी पड़ती है, और रोना-झींकना पड़ता है। अनजान लोग समझते हैं कि "बड़ा आदमी" होने में बड़ा आराम और सुख है, पर वे केवल बाह्य दृष्टि से ही देखकर ऐसा कहते हैं। यदि वे अंतःदृष्टि से भी देखना जानते, तो उनको मालूम पड़ता कि "बड़े आदमी" वास्तव में छोटे लोगों की अपेक्षा भी असंतुष्ट,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अशांत और भयभीत रहते हैं। ऐसे लोग सच्चे सुख के कभी दर्शन भी नहीं कर पाते।

आश्रम-जीवन का प्रभाव और श्रम आदत—

पर जानकी देवी की हार्दिक आकांक्षा थी कि वह गांधीजी के बतलाये सच्चे जीवन-मार्ग पर चले, इसलिए वह सब कठिनाइयों और परेशानियों को सहन करते हुए भी उत्साह से वहाँ के कार्यों में सहयोग देती रही और अपने हाथ से काम करने का ढंग सीखती रही। वहाँ के वातावरण के प्रभाव से उनका मन भी दूसरों की तरह पढ़ने-लिखने का हुआ। इस कार्य में भी आरंभ में उसे कैसी असफलता हुई, इस संबंध में उसने कहा है—

"जहाँ गीता का पाठ होता है, वहाँ मैं भी गीता लेकर पहुँच जाती। सितार सीखने के वर्ग में सितार ले जाती। बापू जी जब बहनों का वर्ग लेते, तो उसमें भी पहुँच जाती। बापू जी रामायण आदि पुस्तकों में से शुद्ध लिख कर लाने के लिए कहते, मैं बड़े चाव से शुद्ध और सुंदर लिख कर बताने का प्रयत्न करती। कापियाँ देखकर बापू जी निशान कर देते थे। लड़कियों के साथ साबरमती नदी में तैरना सीखने की भी कोशिश करती। मैं सीखने के हर स्थान पर पहुँचती, पर पूरी जानकारी किसी बात की न कर सकी। आश्रम की बहनें मुझ पर हँसती रहती और कहतीं कि जिस वर्ग में देखो जानकी बहन हाजिर रहती है। पर वे यह नहीं जानती थीं कि मैं जहाँ की तहाँ ही रहती थी। नया पाठ लेने से चूकती नहीं, पर पिछला भूलती चली जाती।"

"आश्रम में पाखाना सफाई का काम आश्रमवासी ही करते थे। बापू ने जीवन-साधना की शुरूआत भंगी के काम से ही मानी है। जिसको इस काम से ग्लानि हो भय हो उसका आश्रम में रहना संभव न था। हम लोग भी पाखाने में ही शौच जाते थे। मैंने देखा कि वहाँ तो तो ब्राह्मण, पंडित सब बिना हिचक के पाखाने की सफाई करते हैं। मैं भी एक दिन हिम्मत करके गई। मन में उत्साह जो था। नाक पर साड़ी लपेट ली और चली गई। मैले की बाल्टी में एक बाँस डाल कर दो आदमी पकड़ कर खाद के गढ़े तक ले जा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहे थे। मैले पर काफी मिट्टी पड़ी होने से बास आने या ग्लानि होने की कोई बात ही नहीं थी। मैंने भी बाँस का एक छोर पकड़ा और डरते-डरते मुँह फेर कर उसे गढ़े तक पहुँचा दिया। पर बाल्टी पहुँचाने के बाद लौट कर सिर से पैर तक रगड़-रगड़ कर स्नान किया और गोबर लगा कर हाथ-पैरों की शुद्धि की। पाखाना सफाई का यह मेरा पहला ही मौका था।"

पंजाब की प्रसिद्ध जननेत्री श्रीमती सरलादेवी चौधरानी साबरमती आश्रम में बीमार हो गई। उनको टायफाइड हो गया। उनकी सेवा करने को महात्मा गांधी ने जमनादास गांधी को नियुक्त कर दिया। दो-तीन दिन बाद ही सरला देवी ने बापू जी से शिकायत की कि जमनादास उनकी सेवा ठीक तरह नहीं कर सकते। गांधी जी ने अपने पुत्र देवदास से कहा कि "कल से तुम इस काम को करना।" पर देवदास ने कहा कि "कल मेरी भी शिकायत होगी, इसलिए मेरा न जाना ही ठीक है।" इसके बाद श्रीमती संतानम की ड्यूटी वहाँ लगाई गई, पर उनकी भी शिकायत हुई। यह देख कर जानकी देवी के मन में यह बात आई कि मैं भी देखूँ कि सेवा में क्या कमी रह जाती है, जिससे शिकायत का अवसर आता है। साथ ही मैं सेवा करने का तरीका भी सीख लूँगी। वहाँ जानकी देवी को जो अनुभव हुआ, यह उन्होंने इस प्रकार प्रकट किया है—

"दूसरे दिन से मैं उनकी सेवा में हाजिर हो गई। धूप और अगरबत्ती जला कर मैंने उनके कमरे में सुगंध कर दी। झाड़ू भी धीरे-धीरे दी। उन्होंने पेशाब का डब्बा बाहर रखने को कहा, वह भी मैंने रख दिया। फिर चोटी बनाने को कहा। मैंने चोटी बनाना शुरू किया। उनके बाल बड़े लंबे थे, मैंने चोटी बहुत धीरे-धीरे की, कि कहीं कोई बाल खिंच न जाय। मेरा काम उनको ठीक लगा।"

"टट्टी-पेशाब का कमोड तो मैं बाहर रख देती, पर मेहतर के हाथ का धोया गीला कमोड भीतर कैसे रखूँ ! इस दुविधा को मैंने गोमती बहन के सामने रखा। उसने कहा कि जब आप वहाँ के काम के लिए जाती हो, तो वहाँ के कपड़े अलग रखो और घर के कपड़े अलग। मैंने कहा "कपड़े बदलना तो ठीक, पर सिर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रोज-रोज कैसे धोऊँगी ?" गोमती बहन ने समझाया "सिर की बात छोड़ दो।"

"जब सरलादेवी को मालूम हुआ कि मैं जमनालाल की पत्नी हूँ, तो उन्होंने कहा कि पेशाब का बर्तन बार-बार मत निकाला करो। जब टट्टी हो तब दोनों एक बार ही निकाल दिया करो। इससे मुझे संतोष हुआ, क्योंकि इस प्रकार यह काम स्नान के पहले भी हो सकता था।"

वातावरण और सत्संग के प्रभाव से मनुष्य में कितना परिवर्तन हो जाता है, इसके लिए जानकीदेवी का उदाहरण बहुत प्रभावशाली है। कहाँ तो उसका यह हाल था कि नल के पानी का छींटा पड़ जाने पर भी स्नान करती थी, चौका-चूल्हे और छुआ-छूत के नियमों का कड़ाई के साथ पालन करती थी और कहाँ दूसरों की टट्टी और पेशाब उठाने में भी संकोच छोड़ दिया। गांधी जी के आचरण और अन्य आश्रमवासियों के उदाहरण से उसने प्रत्यक्ष देख लिया कि छुआ-छूत की अपेक्षा बहुत बड़ा धर्म पीड़ितों और आपद-ग्रस्तों की सेवा करना है। जब वह विनोबा भावे जैसे महापुरुषों को टट्टी की सफाई करती देखती थी तब उसमें किसी प्रकार के दोष का विचार कैसे करती ? आश्रम में कुछ समय रह कर उसने समझ लिया कि असली धर्म छुआ-छूत और बाह्य शुद्धता के नियमों के पालन करने में नहीं है, वरन् उससे अधिक आवश्यकता आंतरिक शुद्धि की—सद् विचारों और श्रेष्ठ भावनाओं की हैं। यदि हम अपने शरीर, मन और सामग्री का उपयोग दूसरों का उपकार करने में, किसी दीन-दुःखी की सेवा में करते हैं, अपने हृदय में लोक-कल्याण की भावना रखकर सार्वजनिक हित के कार्य करते हैं, तो हमारी बाह्य-शुद्धि भी शोभा की बात मानी जा सकती है। पर यदि आचरण की दृष्टि से हम संकीर्ण और स्वार्थी ही बने रहें, तो ऊपरी स्नान-ध्यान का कोई खास महत्त्व नहीं समझा जा सकता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

असहयोग आंदोलन में देश-सेवा—

जमनालाल जी ने एक प्रकार से अपनी सम्पत्ति और सामग्री तो देशोद्धार के लिए अर्पित कर ही दी थी, पर एक देश-सेवक की हैसियत से उन्होंने स्वयं बार-बार जेल जाकर कष्ट भोगने में भी कमी नहीं रहने दी। जेल में उनकी स्थिति को देखकर अदालत उनको 'ए' क्लास में रखकर बहुत-सी सुविधायें देने का आदेश देती थीं, पर वे कहते कि जब हमारे अन्य साथी 'सी' क्लास में रहकर असुविधा सहन करते हैं, तो हम 'ए' क्लास में आराम के साथ कैसे रह सकते हैं ? "इसलिए वे जान बूझ कर 'सी' क्लास में आकर वैसी ही सूखी रोटी और घटिया साग-भाजी आदि खाते थे। इसका प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर खराब पड़ा और उनको कई प्रकार की शारीरिक शिकायतें पैदा हो गईं।

जानकीदेवी हर तरह से पति की अनुगामिनी थी। जमनालाल जी के जेल जाने के बाद वह स्वयं आंदोलन में जोरों से भाग लेने लगती और सत्याग्रह के अवसर पर मौके पर पहुँचकर सहायता का कार्य करती। वह स्वयं भी सत्याग्रह करके जेल गई, और अपने पुत्रों को भी प्रेरणा देकर जेल भेजा। जेल में भी वह अपने आचार-विचार संबंधी नियमों पर दृढ़ रही, जिससे एक बार तो बीमार होकर मरते-मरते बची। इसका वर्णन करते हुए उनके जीवन वृतांत में एक स्थान पर कहा गया है—

"जब तक मैं वर्धा-जेल में रही तब तक खाने का डब्बा घर से आता रहा, इसलिए कोई मुश्किल मालूम नहीं हुई। कुछ दिन बाद नागपुर जेल में भेजने की आज्ञा आई। मुझे डर लगा कि हे भगवान् ! अब कैसे होगा ? मेरा नागपुर जाना घर वालों को मालूम न हो सका। 'गांधी जी की जय' के नारे लगाते हुए हम जा रहे थे। जब नागपुर जेल में पहुँची, तो देखा कि वह तो एक बड़े महल की तरह है। एक के बाद एक तीन-चार दरवाजे लाँघने पर एक साफ कोठरी मिली। वहाँ दस कोठरियाँ थीं। एक कोठरी में जाली का पलंग, कुर्सी आदि सामान भी था। मैंने उसी में अपने साथ लाई चीजों को घर की तरह जमा दिया।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"नागपुर जेल के सुपरिंटेंडेंट अनुशासन में बड़े कठोर थे और कैदी उन्हें "जालिम" कहा करते थे। मैं वहाँ 'ए' क्लास में थी। उन्होंने मुझसे आवश्यक सामान आदि के बारे में पूछा। मैंने कह दिया कि "और तो जो कुछ है उसी से चला जायेगा, पर मेरा गाय के घी-दूध प्रयोग करने का ही नियम है।" उन्होंने कहा कि गाय का दूध तो यहाँ से दे दिया जायेगा, घी घर से मँगवा सकती हो। मैंने उबले हुए साग और रोटी के लिए ही कहा, क्योंकि मिर्च खाने की मेरी आदत न थी। जब मैंने देखा कि वहाँ कैदियों में स्टोव जलाने के लिए दियासलाई की भी खींचातानी चलती है तब मैं कच्चे दूध में ही नीबू डाल कर दही जमाने लगी। खाने के लिये बैंगन का शाक और रूखी रोटी आती थी। उसी पर बिना तपा हुआ घी रख कर खा लेती। ठंडे पानी से ही नहाती और कपड़े धो लेती। हमारे यहाँ टट्टी के लोटे को मिट्टी से माँजने का रिवाज है, पर महाराष्ट्र में इस पर इतना ध्यान नहीं दिया जाता। जब कोई टट्टी होकर आता और अपनी आदत के अनुसार मेरी बाल्टी में लोटा डुबो देता तब मैं बाल्टी को फिर मिट्टी से माँजती। इस तरह मेरा नाम बढ़ता ही जाता था।"

इस तरह जानकी देवी को जेल का खाना-पीना और व्यवस्था अनुकूल सिद्ध नहीं हुई और वह बीमार हो गई। घर पर तो सब काम ठीक समय पर नौकर कर देते थे, पर यहाँ जेल में सब कुछ अनियमित हो गया। घर में गरम पानी से स्नान आदि की आदत थी, पर यहाँ ठंडे से ही काम चलाना पड़ता था। इससे कुछ ही दिनों में बुखार आने लगा। डॉक्टर ने दवा खाने को कहा, तो उसके लिए इनकार कर दिया। दिन में तीन, चार टट्टी और उल्टियाँ भी होने लगीं। रात में कोठरी के भीतर कमोड पर ही टट्टी जाना पड़ता था। सात दिन में ही तेईस पौंड वजन घट गया। बवासीर की शिकायत पहले से ही थी। अब खून की टट्टियाँ और खून की उल्टियाँ होने लगीं। एक दिन तो तबियत ऐसी खराब हो गई कि बाहर इनके मरने की खबर फैल गई। पहले यह खबर किशोर लाल भाई ने सुनी, पर उन्होंने जमना लाल को बताया नहीं। बाद में सबको खबर लग गई कि जानकी देवी की हालत बहुत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खराब हो गई है। इनको जेल में अस्पताल में ले जाने को स्ट्रेचर भी आ गया, पर साथी महिलाओं ने कहा कि अब शाम को जाने से तकलीफ होगी सुबह ले जाना। इसके बाद दुर्गावती जोशी ने कहा मैं एक दवाई बनाकर देती हूँ, यदि उससे रात भर में फायदा हो गया तो अस्पताल नहीं जाना पड़ेगा। उन्होंने चावल का माड़ बनाकर उसमें नमक तथा जीरा मिलाया और घी का छौंक देकर चटा दिया। उससे वास्तव में काफी आराम हुआ। इसके पश्चात् दही और छाछ का सेवन बताया गया। पर दही जमाने के लिये जामन का जेल में मिल सकना कठिन था, क्योंकि वे शुद्ध गाय के दूध का ही जामन भी चाहती थी। अंत में वह वर्धा से ही मँगाया गया और तब दही तथा छाछ का सेवन करने से स्वास्थ्य ठीक हो सका। इस अवसर पर संग में जो अन्य सत्याग्रही महिला कैदी थीं। उन्होंने इनकी दिल से सेवा की और उसी से शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हो सका।

असहयोग आंदोलन में समस्त भारत में जहाँ जेल जाने वाले पुरुषों की संख्या लाखों थी, वहाँ स्त्रियों ने भी हजारों की संख्या में जेल-यात्रा की थी। यद्यपि स्त्रियाँ राजनीतिक बातों को अधिक नहीं समझती थीं, पर गांधी जी के ऊपर उनका भगवान् की तरह ही विश्वास हो गया था, इसलिए उनके आदेश को सुन कर वे सब तरह के कष्टों को सहने को तैयार हो जाती थीं। पर अधिकांश जीवन घर के भीतर ही बिताने और संसार में नित्य प्रति होने वाले संघर्ष से अपरिचित होने के कारण उनको थोड़े से परिवर्तन में ही कठिनाई जान पड़ती थी। फिर जेलखाने की तो दुनिया ही दूसरी होती है। वहाँ तो हर एक व्यक्ति को अपराधी मनोवृत्ति का समझ कर उसे हर तरह से दबा कर रखने की चेष्टा की जाती है। यद्यपि असहयोग में जेल जाने वाली सभी स्त्रियाँ बड़ी सभ्य, सहृदय और प्रायः ऊँचे परिवारों की ही थीं और सरकार भी इस बात को समझकर उनके साथ अधिक कड़ाई नहीं करती थी, पर फिर भी जेल के भीतर कुछ तो सख्ती बरती ही जाती है। वहाँ के कायदे कानून ही ऐसे हैं जिनसे सामान्य मनुष्य घबड़ा जाता है। फिर भी जानकीदेवी वहाँ शांति और बिना घबराहट के रह आई। गंभीर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बीमारी हो जाने पर भी अपने नियम पर कायम रही। यह कम साहस और प्रशंसा की बात नहीं है। वह बहुत बड़े घर की महिला थी, जिसे कभी किसी बात का अभाव सहन करना ही नहीं पड़ता था, पर उसने जेलखाने जाकर वहाँ छह महीने बिता दिये, इसे उसकी सच्ची देश भक्ति का प्रमाण ही मानना चाहिए।

परेशानी में भी आत्म संयम—

जानकीदेवी ने राष्ट्र पिता गांधी जी के आदेशानुसार गहने और पर्दा ही नहीं छोड़ा, वह मारवाड़ी समाज की एक परंपरावादी स्त्री होते हुए जेलखाने जैसे अपावन स्थान में ही नहीं हो आई, वरन् उससे भी बढ़कर उसने यह किया कि देशोद्धार के लिए अपने पति तथा पुत्रों का वियोग भी स्वीकार कर लिया। जेलखानों के जीवन के अभ्यस्त न होने के कारण वहाँ बार-बार जाने से जमनालाल जी का स्वास्थ्य भंग हो गया और उनका अल्प आयु में ही स्वर्गवास हो गया। उसके दोनों पुत्रों को सत्याग्रह और सन् १९४२ के आंदोलन में जेल में कठोर यातनाएँ सहन करनी पड़ीं और वे मरते-मरते बचे। खैर, ये बातें तो कभी-कभी ही सहन करनी पड़ती थीं, पर जमनालाल जी असहयोग आंदोलन में इतने अधिक व्यस्त हो गये थे कि उनको अपनी पत्नी से बातें करने के लिए दो-चार मिनट का समय नहीं मिलता था। यह भी उसके लिए कम खेद की बात नहीं थी। वह जमनालाल जी की सेवा करना चाहती थी, उनको कोई तकलीफ हो तो उनकी देखभाल करने को प्रस्तुत रहती थी, पर जमनालाल जी के पीछे एक के बाद दूसरा काम और एक व्यक्ति से बात खत्म होते ही दूसरे व्यक्ति का आ जाना इस तरह लगा रहता था कि घर के भीतर तो कुछ मिनट भी नहीं ठहर पाते थे। इससे जानकीदेवी को कभी-कभी बड़ा खेद होता था। इसका एक उदाहरण देते हुए उसने कहा है—

"जमनालाल जी के कान में दर्द रहा करता था। बहुत इलाज कराया, पर कोई लाभ न हुआ। उसका मेरे मन पर भी बोझ रहता था। मेरी झुँझलाहट इसलिए भी थी कि वे अस्वस्थ होते हुए भी निरंतर कार्य में लगे रहते थे। मेरे कहने का कोई असर नहीं होता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

था। यदि वह घर पर रहते तो आने-जाने वालों का ताँता लगा रहता था। उन लोगों की आवभगत, व्यवस्था तथा कार्यों के संबंध में बातें होती रहती थीं। उनको अतिथि सत्कार और सार्वजनिक कार्य में ही आनंद और सुख मालूम देता था। बाहर जाते तब भी कार्यकर्ताओं के साथ बातों में लगे रहते। मोटर में, रेल में भी काम की बातें चलती रहतीं। मैं चाहती थी कि वे थोड़ा आराम करें, पर उनकी बातें क्यों रुकने लगीं। बातों में वह इतना थक जाते कि मुझे उनसे बात करने में भी दया आने लगती। गुस्सा तो मन में रहता ही, पर क्या करती ? अतिप्रेम की इन दो अवस्थाओं में मेरा शरीर अस्वस्थ और कमजोर तथा मन चिड़चिड़ा रहने लगा। बात-बात में बोलने के स्थान पर रोना आ जाता था।"

"मैं चाहती कि उन्हें थोड़ा आराम मिले। मुझे उनकी सेवा करने का थोड़ा मौका मिले, पर ऐसा कुछ बनता ही नहीं था। इसका मुख्य कारण था सार्वजनिक कार्य, मेहमानों का आना जाना, सेक्रेटरियों और नौकरों से माथापच्ची। मैं सोचती थी कि ये ही बातें हैं जिनके कारण उनको आराम का अवसर नहीं मिलता और मैं भी सेवा करने से वंचित हूँ। आदमी मोह के कारण क्या-क्या नहीं सोच लेता ? सो मैं उनको परेशान और व्यस्त रखने वाली इन सब बातों से चिढ़ने लगी। वह कोई सार्वजनिक बातें करते या दौरे में साथ चलने को कहते, तो मुझे गुस्सा आ जाता। इसी बात पर हम दोनों में दिनों दिन खींचा-तानी बढ़ने लगी। वह स्वयं समाधान के लिए भरसक प्रयत्न करते थे और जानते भी थे कि दोनों में यह खींचातानी क्यों हो रही है, लेकिन उनका जीवन तो पूरी तरह से सार्वजनिक ही हो गया था। वह चाहते तो भी उससे कैसे छूट सकते थे ? वे तो उसमें सिर से पैर तक डूब चुके थे। यह तो मेरा ही काम था कि मैं उनके स्वभाव और रुचि को समझ कर उनका साथ देती और उनके आनंद में अपना आनंद मानती।"

यहाँ पर जानकीदेवी ने पतिव्रत और स्त्री-धर्म की मूल बात कह दी। पतिव्रत धूपबत्ती अथवा दीपक जलाकर पति की पूजा करने में नहीं है, वह है उनकी अंतरात्मा में अपनी अंतरात्मा का योग कर देने में। इसी को शास्त्रों में "गृहस्थ-योग" कहा गया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐसी पत्नी एक और एक ग्यारह की लोकोक्ति के अनुसार अपने पति की शक्ति को कई गुना बढ़ा देती है। इसके विपरीत जो स्त्री शरीर से और बाह्य रूप से तो पतिव्रत का पालन करती है, पर अपने मन तथा अंतरात्मा को पति के मन तथा अंतरात्मा के अनुकूल नहीं बनाती, उसका पतिव्रत प्रशंसा के योग्य नहीं माना जा सकता है। हमें खेद से कहना पड़ता है कि आजकल हमारी अधिकांश महिलायें, चाहे शिक्षित हो या अशिक्षित, इसी श्रेणी में आती हैं। इसी कारण हजारों व्यक्ति समाज-सेवा की इच्छा और अभिलाषा रखते हुए भी उससे वंचित रह जाते हैं। इसलिए स्त्रियों को चाहिये कि वे पतिव्रत के वास्तविक तत्त्व को समझें और व्यवहार में लावें, जिससे वे अपने पति की सच्ची सहकारिणी कही जा सकें।

जानकीदेवी विवाह के समय बिल्कुल अपढ़ और रूढ़िग्रस्त थी, परंतु पति के विचारों और आकांक्षाओं के अनुकूल आचरण करके उसने उनका हार्दिक प्रेम ही प्राप्त नहीं किया वरन् स्वयं महत्त्वपूर्ण समाज सेवा करके अपना मानव-जन्म भी कृतार्थ कर लिया। गहनों का लालच और पर्दे के भीतर छिपकर रहना हमारे सामाजिक जीवन के दो बड़े अभिशाप हैं, जिनके कारण समाज का आधा अंग—महिला समाज, गिरी हुई अवस्था में पड़ा है। यदि महिलायें इनसे छुटकारा पा सकें, तो देखते-देखते उनकी कायापलट हो जाय। तब वे भी जानकी देवी की तरह "कूपदान" जैसे समाज सेवा के बड़े-बड़े काम करने में समर्थ हो सकेंगी।

यह ठीक है कि शिक्षा की कमी और बाह्य जगत् से विशेष संपर्क न रहने के कारण भारतीय स्त्रियाँ एक सीमित दायरे में ही बनी रहती है। अपने निजी परिवार और अधिक हुआ तो नाते-रिश्ते के व्यक्तियों के अतिरिक्त और किसी के हित-अनहित की तरफ ध्यान देना वे अनावश्यक समझती हैं। इसका एक कारण यह भी होता है कि भारतीय समाज में स्त्री का पर पुरुषों से किसी भी प्रकार संपर्क में आना—साधारण बातचीत भी करना अच्छा नहीं समझा जाता। ऐसी दशा में उनसे सार्वजनिक जीवन में भाग लेने की क्या आशा की जा सकती है ? जानकीदेवी भी गांधी जी तथा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विनोबा जैसे महामानवों से प्रेरणा और प्रोत्साहन पाकर भी अधिकांश में महिला समाज में ही काम करती रही। उन्होंने पुरुषों में खुल कर काम किया हो, ऐसा उनके जीवन वृतांत से प्रकट नहीं होता। फिर भी यदि पुरुष चाहें तो अपनी पत्नियों को सार्वजनिक-सेवा के लिए बहुत कुछ उपयोगी बना सकते हैं। जानकीदेवी ने लिखा है कि उसका सार्वजनिक जो कुछ है वह जमनालाल जी की ही देन है, जिसे बाद में गांधी जी और विनोबा से प्रेरणा मिलती रही—

"नौ बरस की उम्र में जावरा से वर्धा अपरिचितों के बीच में रहने को गई। छोटी-सी कच्ची उम्र में ही माता-पिता से जो संस्कार मिल सके उनको लेकर ससुराल गई। जब होश सँभाला तो सास और दादा-ससुर का साया उठ चुका था, तब जमनालाल जी से संपर्क और परिचय बढ़ने लगा और उन्होंने मेरा जीवन अपने विचारों के अनुसार ढालना आरंभ किया। पर वे अपनी कोई भी इच्छा मुझ पर लादते नहीं थे। जो बात अच्छी होती थी, उस ओर इशारा मात्र कर देते थे। इस प्रकार जीवन चल रहा था कि गांधी जी आये। उन्होंने तो हमारे जीवन में तूफान की तरह प्रवेश किया। सारा जीवन ही बदल गया। उसके बाद विनोबा जी से परिचय बढ़ा। इस प्रकार मेरा जीवन आज जो कुछ है, जमनालाल जी, बापू जी और विनोबा जी का बनाया है। बापू जी को अपनी जीवन-साधना में कठिन प्रयत्न करना पड़ा था। उन्होंने बड़े नियम से, दृढ़ता से, परिश्रम से अपने जीवन को बनाया। विनोबा के लिए सब कुछ सहन करने योग्य है। इस प्रकार इन तीन साधकों और महापुरुषों के निकट संपर्क में रहने और अपनी शक्ति भर प्रयत्न करते रहने से, जैसी मैं बन सकी हूँ, उसका परिचय, मेरी जीवन-कथा से मिल सकता है।"

निस्संदेह हमारे देश में अभी तक स्त्रियों को समाजोपयोगी बना सकना पुरुषों के ही हाथ में है। जिस घर में पुरुष स्वयं संकीर्ण विचारों के होंगे या स्त्रियों के समाज में मिलने-जुलने को शंका की दृष्टि से देखते होंगे? वहाँ की स्त्रियों से किसी प्रकार की आशा करना ही व्यर्थ है। सब कुछ परिवर्तन हो जाने पर भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारतीय स्त्री अभी तक पुरुष की आश्रित है। हिंदू धर्म के सिद्धांतों ने तो उसे जन्म-जन्मांतर के लिए अपनी पति की "दासी" बनकर रहने की भावना पैदा कर ही दी है। सामाजिक परंपरा के अनुसार भी स्त्री का पुरुष की इच्छा के अनुकूल चलना ही प्रशस्त माना गया है, अन्यथा उसकी चर्चा और निंदा होने लगती है। इस प्रकार स्त्रियों को देश और समाज के लिए उपयोगी बनाना अधिकांश में पुरुषों का ही काम है। हाँ, इस प्रकार की सुविधा मिलने पर आगे बढ़ना तथा स्वार्थभाव को कम करके परोपकार के कार्यों में रुचि लेना, स्त्री के निजी स्वभाव और प्रयत्न पर निर्भर है। जैसा अनेक विद्वानों का मत है, गाँधी-युग ही भारतीय समाज की काया पलट करने वाला है। हिंदू-जाति में जो अनेक प्रकार की हानिकारक परंपरायें प्रचलित थीं। उनके निराकरण सफल प्रयास महात्मा गांधी ने ही किया। अछूतोद्धार के लिए उन्होंने जिस प्रकार अपनी सारी शक्ति लगा दी, और अपने प्राणों की बाजी लगा कर अस्पृश्य जातियों को हिंदुत्त्व के दायरे में ही रखा, उसका हाल सभी जानते हैं। उन्हीं के आंदोलन के प्रभाव से आज अछूत जातियों के व्यक्ति राज्य-मंत्री से लेकर कलक्टर, कमिश्नर तक बने हुये हैं। इसी प्रकार भारतीय नारियों को अशिक्षा, पर्दे, जेवर आदि की बुराइयों से छुड़ा कर सार्वजनिक जीवन में प्रविष्ट हो सकने योग्य बनाने का श्रेय भी महात्मा जी को ही है। यद्यपि उनसे पहले ही स्त्री शिक्षा का प्रचार हो चुका था। कितने ही कन्या स्कूल खुले। कुछ स्त्रियाँ बी० ए०, एम० ए० की डिग्रियाँ प्राप्त कर चुकी थीं, पर सार्वजनिक जीवन में उनका प्रवेश न हो सका था। गांधी जी ने स्त्रियों को असहयोग और सत्याग्रह आंदोलन में सम्मिलित करके उनकी झिझक निकाल दी और वे समझ गई कि घर-गृहस्थी का उत्तरदायित्व सर पर रहने पर भी उनको समय आने पर समाज और देश सेवा के कार्यों में सहयोग देना ही चाहिये। जानकीदेवी ऐसी ही स्त्रियों का एक उदाहरण है। मारवाड़ी समाज में स्त्रियों की दशा जितनी पिछड़ी हुई थी और वे अंधविश्वासों तथा मूढ़ परंपराओं में जितनी अधिक ग्रस्त थीं, उससे कोई जानकार व्यक्ति इनकार नहीं कर सकता। पर महात्मा जी की प्रेरणा से जानकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देवी ने स्वयं उन सब से मुक्त होकर अपने समाज की सैकड़ों स्त्रियों को बंधन मुक्त करके समाज सेविका बना दिया, यह कम महत्त्व की बात नहीं है।

एक जानकीदेवी ही नहीं, महात्मा जी के आंदोलन की प्रेरणा से और भी हजारों स्त्रियाँ उच्च श्रेणी की समाज सेविका और देश-सेवा की व्रतधारी बन गईं। उदाहरण के लिए श्रीमती सरोजिनी नायडू महात्मा जी के संपर्क में आने से पूर्व केवल एक प्रसिद्ध कवियित्री ही थीं और कभी-कभी कांग्रेस, कॉन्फरेंसों में देश सुधार संबंधी विषयों पर साधारण भाषण दे लिया करती थीं। पर असहयोग आंदोलन में भाग लेने के उपरांत वे देश की एक कर्मठ नेता बन गईं और फैशन तथा सुख-विलास की जिंदगी को त्याग कर जेलखाने की रोटियाँ खाने लगीं। नमक सत्याग्रह के समय उन्होंने घंटों तक खुले मैदान में खड़े रहकर जो सहिष्णुता का भाव प्रकट किया, उससे सिद्ध हो गया कि कोमल से कोमल भारतीय नारी कर्तव्य की पुकार सुन कर त्याग और बलिदान का महान् आदर्श उपस्थित कर सकती हैं। इसी प्रकार अवंतिका बाई गोखले ने गांधी जी के कार्यारंभ करते ही बंबई के सुख-समृद्धि पूर्ण जीवन को त्याग कर चंपारन (बिहार) के पिछड़े हुए गाँवों का रहन-सहन स्वीकार किया और वहाँ रहने वाले मैले-कुचैले बच्चों तथा स्त्रियों को अपनी सेवा के बल से एक नया जीवन प्रदान कर दिया। उसने चंपारन-सत्याग्रह आंदोलन में वह काम करके दिखा दिया, जो वहाँ के निवासियों द्वारा आज तक याद किया जाता है। जानकीदेवी का सौभाग्य था कि उसे भी इस प्रकार की त्यागी और सेवाभावसंपन्न महिलाओं तथा गांधी जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ, जिससे वह अपने को दीन-दुखियों की सहायिका और सेविका बनाकर अपना जीवन सफल कर सकी।

❐ ❐

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org